REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 7 | APRIL - 2025

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

रितेश तिवारी,
शोधार्थी (इतिहास), डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

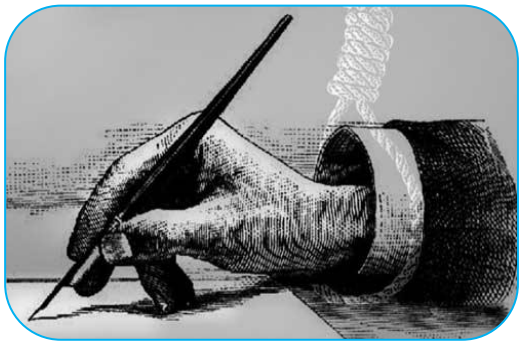

पत्रकारिता एवं साहित्य दोनो को ही समाज का दर्पण कहा जाता है क्योकि साहित्य एवं पत्र–पत्रिका ही ऐसे माध्यम है जो अपने समयकाल की घटनाओं एवं समस्याओं को राष्ट्र एवं समाज के सम्मुख दृढ़ता से प्रस्तुत करता है। उदंत मार्तंड (द राइजिंग सन) नामक प्रथम हिन्दी भाषी समाचार पत्र था जिसे पहली बार भारत में 30 मई 1826 से प्रकाि"ात किया गया, इसको सम्पूर्ण भारतवर्ष में हिन्दी पत्रकारिता दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वाधीनता काल में पत्र– पत्रिकाएं तथा साहित्य दोनो ने ही समाज अथवा राष्ट्र में नव चेतना लाने में अपना योगदान दिया। लोगों को संगठित करना तथा उनके समक्ष भारत भूमि की गौरवगाथा का वर्णन करना ,जन–आंदोलनों को प्रोत्साहित करना तथा ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष के लिए जनता को प्रेरित करना आदि अनेकों कार्यों में पत्रकारिता के य"ागान को राष्ट्र कभी नहीं भूला सकता। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता समाज में अपने युगबोध, जातीय चेतना, और दायित्व के प्रति सदैव तत्पर रहे। अंग्रेजी हुकूमत की दमनकारी नीतियों का उन्होंने भरपूर विरोध किया।

शब्दकुंजी – भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, पत्रकारिता, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि .....इत्यादि।

प्रस्तावना –

पत्रकारिता को पराधीन भारत में अंग्रेजो के कष्ट पूर्ण व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। अंग्रेजो को इस बात का आभास पूर्व से ही हो चुका था कि पत्रकारिता से अंग्रेजी हुकूमत को भीतरी एवं बाहरी दोनो दृष्टिकोण से क्षति पहुंचाने वाली थी इसी लिए उन्होंने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। 19वीं शताब्दी में पत्रकारिता की चेष्टा और स्वाधीनता आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल एवं भयंकर कठिनाइयों भरी परिथितियों का सामना करते हुए समाज के लिए प्रतिबद्ध था इसका प्रमाण आज भी इतिहास के पन्नों में मुखर है।

भारत में पत्रकारिता का आरम्भ अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में भारतवर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म कलकत्ता, बंबई और मद्रास में हुआ। कलकत्ता में हालांकि 1780 ई. में प्रकाशित हिक्की नामक कलकत्ता गजट पहला प्रयत्न था। उदंत मार्तण्ड (1826) के प्रका"ान से पहले अंग्रेजी पत्रकारिता ऐंग्लो इंडियन नामक अखबार का भारत में काफी चलन था। इसका पतन होते–होते 18 वीं शताब्दी में लगभग

फारसी पत्रकारित का भी उदभव हो चुका था फारसी पत्र हस्तलिखित हुआ करते थे। उत्तर भारत में 1801 में हिंदुस्थान इंटेलिजेंस ओरिऐंटल ऐंथॉलॉजी नाम का पत्र संकलन प्रकाशित हुआ जो अनेको पत्रकारिता के उद्धरण कहलाये। मौलवी इकराम अली ने 1810 में कलकत्ता से लीथो पत्र नामक पत्रिकाका प्रका"ान प्रारम्भ किया। बंगाल गजट् का प्रवर्तन 1816 में गंगा किशोर भट्टाचार्य ने किया। जो भारत का प्रथम बंगला पत्र था। 27 मई 1818 को श्रीरामपुर के पादरियों ने समाचार दर्पण नामक प्रसिद्ध प्रचार पत्र को संपादित किया। 1823 से फारसी उर्दू के अखबार शमसुल , अखबारजामे जहाँनुमा हुए। बाँगला भाषा के समाचार संवाद कौमुदी तथा चंद्रिका हुए तथा गुजराती भाषा के समाचार मुंबई समाचार के सामने आये। इसके प"चात् दिल्ली का उर्दू अखबार् (1833) तथा पंडित जुगल किशोर उदंत मार्तंड मराठी समाचार पत्र के संपादक थे। यह एक साप्ताहिक पत्र था।

शोध का उद्देश्य –

- **स्वाधीनता आंदोलन कालीन पत्र–पत्रिकाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।**
- **स्वाधीनता आंदोलन कालीन पत्र–पत्रिकाओं का परिचात्मक अध्ययन करना।**

विश्लेषण –

1826 ई. से 1873 ई. तक पत्रकारिता के इतिहास को हम हिंदी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने 1873 ई. में हरिश्चंद्र नामक मैगजीन् की स्थापना की थी। कुछ समय प"चात् यह पत्र हरिश्चंद्र चंद्रिका के नाम से विख्यात हुआ। 1867 में भारतेन्दु का कविवचन सुधा् पत्र प्रका"ित हो चुका था और पत्रकारिता के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। हरिश्चंद्र मैगजीन नई भाषा शैली का प्रवर्तन 1873 में हुआ। इन सब के बीच अधिक्तर पत्र–पत्रिकाएं मात्र एक प्रयोग का साधन कहे जा सकते हैं और पत्रकला का ज्ञान उनके पीछे नए विचारों के प्रचार–प्रसार की भावना नहीं है। उदन्त मार्तण्ड के बाद प्रमुख पत्र निम्नलिखित हैं– बंगदूत, प्रजामित्र, बनारस अखबार, मार्तंड पंचभाषीय ज्ञानदीप, मालवा अखबार, जगद्दीप भास्कर, सुधाकर, साम्यदन्त मार्तंड, मजहरुलसरूर, बुद्धिप्रकाश, ग्वालियर गजेट, समाचार सुधावर्षण, दैनिक कलकत्ता, प्रजाहितैषी, सर्वहितकारक, सूरजप्रकाश, जगलाभचिंतक, सर्वोपकारक, प्रजाहित, लोकमित्र, भारतखंडामृत, तत्वबोधिनी पत्रिका, ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका, सोमप्रकाश, सत्यदीपक आदि अनेकों हैं।

इनमें से कुछ पत्रिकाएं मासिक पत्रिकाएं थी तथा कुछ पत्रिकाएं साप्ताहिक थी। दैनिक पत्र केवल एक था समाचार सुधावर्षण जो द्विभाषीय (बंगला एवं हिंदी) में प्रका"ित किया जाता था तथा यह कलकत्ता से प्रकाशित किया जाता था। 1871तकयह दैनिक पत्र चलता रहा। उन दिनोंआगरा बड़ा शिक्षा केंद्र था। अधिकांश पत्र–पत्रिकाएँ यहीं से ही प्रकाशित होते थे जो विद्यार्थी,समाज एवं राष्ट्र की आव"यकताओंकी पूर्ति करते थे।लगभग अधिकतर पत्र–पत्रिकाएं द्विभाषीय (हिंदी तथा उर्दू) भाषाओं के होते थे कुछ पत्र–पत्रिकाएं तो पंचभाषाओं के भी होते थे। 1845 में हिंदी भाषी प्रदे"ाों के प्रारंभिक पत्रों में बनारस अखबार् काफी प्रभावशाली माना जाता था तथा 1850 तारामोहन मैत्र ने इन्हीं की भाषायी नीतियों के विरोध में काशी से साप्ताहिक सुधाकर्ष का प्रका"ान किया गया तथा 1855 में राजा लक्ष्मण सिंह ने आगरा से प्रजा हितैषी अख्बार का प्रकाशन आरम्भ किया। भाषा शैली और विचारों के क्षेत्र में भारतेन्दु जी के हरिश्चंद्र नामक मैगजीन के प्रकाशन में मार्ग ही खोजते दिखाई देते हैं।

1873 से 1900 ई. तक पत्रकारिता का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ। इस दूसरे चरण में एक तरफ हरिश्चंद्र मैगजीन था तथा दूसरे तरफ नागरी प्रचारिणी द्वारा प्रका"ित सरस्वती पत्रिका थी। इस युग के कुल पत्र–पत्रिकाओं की संख्या लगभग 350 से ऊपर थीं जो नागपुर तक फैला हुआ था। अधिकांश पत्र साप्ताहिक अथवा मासिक थे। मासिक पत्रों में निबंध, नवल कथा, वार्ता आदि के रूप में कुछ अधिक रहती थी।किस युग की पत्रकारिता के उद्देश्य बहुआयामी हुआ करते थे। एक ओर राष्ट्रीयता की चेतना , राजनीति चेतना तथा दूसरी और सामाजिक चेतना को जाग्रत करना और हिंदी को उसकी प्रतिष्ठा प्रदान करनाभी परम लक्ष्यो में सम्मिलित था। पत्रकारिता में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का योगदान युगांतरकारी रहा। पत्रकारिता के महानतम कार्य के लिए सबसेत्यागमय जीवन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कहा जाता है। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से ज्ञानवर्धन किया तथा नये लेखकों को भाषा महत्व को समझाया व गद्य –पद्य रचनाओं के लिए मार्ग

का निर्माण किया। इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस कारण से ही उनसे प्रशिक्षित लेखक बाद में देश के महान् रचनाकार तथा पत्रकार बने।द्विवेदी की यह पत्रिका पूर्णतः साहित्यिक थी मैथिलीशरण गुप्त , हरिऔध से लेकर कहीं ना कहीं निराला के निर्माण में भी इस पत्रिका का सहयोग था ।साहित्य के साथ राष्ट्रीयता का प्रसार भी इसकाप्रथम उद्देश्य था। यदि हम इसके बाद की पत्रकारिता का अध्ययन करते हैं तो राष्ट्रीयता का स्वर इस युग की विशेषताएं रही है। पत्रकारिता की भाषा कोसमृद्ध करके महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने नवीन साहित्यकारों को राह दिखाई।

जब राष्ट्रीयता तथा पत्रकारिता समानार्थी शब्द हो चुके थे। साहित्यकार एवं पत्रकार एक ही थे। उनका कार्य जीवन भर साहित्य एवं पत्रकारिता के माध्यम में देश की सेवा करना था। अधिनायकवादी तथा क्रूरता पूर्ण व्यवस्था कें किसी भी पत्रकार या पत्र प्रकाशन का कंगार होना स्वभाविक था। भारतेंदु युग में पत्रकारों को रॉयल्टी अथवा मेहनताना नहीं दी जाती थी, प्रकाशक लेखक की समय–समय पर आर्थिक सहायता रहता था, लेकिन ऐसे भी पत्रकार अथवा लेखक भी थे जो सहायता नहीं लेनाचाहते थे। एक साथ कई पत्र पत्रिका निकालने के कारण भारतेंदुजी कर्ज में डूब चुके थे। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था, पर उन्होंने किसी से सहायता नहीं मांगी। स्वामी रामदेव सिंह उनके' खड्ग विलास प्रेस' के प्रकाशक थे। वह काफी धनी व्यक्ति थेजब उन्हें ज्ञात हुआ कि भारतेंदु कर्ज तथा मर्ज में फंसे हैं तो उन्होंने उनकी आर्थिक सहायता करने का विचार बनाया और की भी। परंतु पंडित अमृतलाल चक्रवर्ती जैसे राष्ट्रनिष्ठ पत्रकार को कर्ज के कारण जेल जाना पड़ा। दुर्गा प्रसाद जैसा पत्रकार तथालेखक अत्यंत दीन–हीन जीवन जीने के लिए विवश हुआ। यह एक लग्न थी देश केलिए। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा आजादी के मध्य की 9 दशको की पत्रकारिता को देखें तो वह स्वतंत्रता के पश्चात की पत्रकारिता में मात्रात्मक रुप से काफी पीछे थीऔर गुणात्मक रूप से कमजोर। पर इसकी राष्ट्रय उपासना का कोई सानी नहीं था।

स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता

राष्ट्रवादी चेतनाओं का प्रसार – समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी चेतना के प्रसार और सम्पूर्ण राष्ट्र विकास में अहम भूमिका निभाई। समाज के पढ़े लिखे लोगों में अखबार अथवा समाचर पत्र पढ़ने का चलन था साहित्यकार समाचार के माध्यम से लोागों में राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार करने का प्रयास करते थे। ये ि"ाक्षित लोग गुलाम राष्ट्र में चोरी–छुपे प्रकाि"ात होने वाले सप्ताहित , मासिक अथवा दैनिक समाचार पत्र अथवा अखबार का पठन करते तथा अि"ाक्षित लोगों को भी पढ़कर सुनाते तथा उन्हें राष्ट्र के गौरव का भान कराते । रचनाकार अंग्रेजी की दमनकारी तथा शोषणकारी नीतियों को पत्रों में प्रकाि"ात करते तथा आवाम को राष्ट्रप्रेम तथा राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर अग्रसर करने का प्रयास करते।

जनमत का निर्माण.– भारतीय स्वाधीनता आंदोलन मेंपत्रकारिता ने जनमत को आकार देने और भारतीयों में राष्ट्रीय पहचान की भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्योंकि स्वाधीनता बिना जनमत के प्राप्त नहीं किया जा सकता था लोगों को सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक रूप से संगठित करना तथा उन्हें अस्त्र के रूप में राष्ट्रीय आदोलन में सदोपयोग करना अति आव"यक हो गया था। लोगों में बैठे डर तथा कायरता को हटानें के लिए पत्र पत्रिकाओं का उपयोग जनमत हासिल करने में करागर साबित हुआ। भारत जैसे वि"ाल राष्ट्र जहाँ लोग आपसी स्वार्थ, मतभेद जाति–धर्म, ऊँच–नीच के दलदल में दबे हुए थे। जिन्हें राष्ट्रीयता के मार्ग में ले जाने तथा सभी के मन से इन समस्त कुरीतियों को मिठाने के लिए पत्रकारिता ने सराहनीय कार्य किया है।

सामाजिक सुधार – पत्रकारिता ने राजनीतिक शिक्षा और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा दिया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम को शक्ति मिली। भारतीय समाज में अनेको सामाजिक बुराईयां विद्यमान थी, राष्ट्र अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदायों में विभाजित था। इनके साथ – साथ राष्ट्र विभन्न दे"ाी रियासतों में विभाजित था प्रत्येक रियासतों में अलग–अलग रीति–रिवाज, रहन– सहन तथा बुराईया थी। समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत गंभीर थी। पत्रकारिता ने ही लोगो का जागरूक किया, समाज में व्याप्त बुराईयों का अंत करने का प्रयास किया। महिलाओं की स्थिति में सुधार, बाल विवाह का प्रतिबंध, विधवा पुर्नविवाह, सती प्रथा का अंत आदि अनेको सामाजिक सुधार के कार्यों को बढ़ावा दिया गया। समाज ऐसे अनेको बुराईयों का अंत कर समाज को मुख्य धारा में जोड़ने

का कार्य पत्रकारिता ने ही किया। लोगों में आपसी भाईचार के रहना तथा धीरे–धीरे दे"ाी रियासतों एवं जमीदारी प्रथा इत्यादि का अंत कर स्वाधीनता आंदोलन में महती भूमिका अदा की।

जनता की आवाज – जनता की आवाज को पत्रकारिता ने बुलंद किया और उनके संघर्ष को सहज अभिव्यक्ति दी. परतंत्रता की बेड़ियों से आजादि का स्वर सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैलाने का सराहनी कार्य पत्रकारिता ने ही किया। जन – जन का मन इस गुलामी की पीडा से थक चुका था। जनता की आवाज बन कर भी पत्रकारिता ने अंग्रेजो को भारत छोडने पर मजबूर कर दिया।

धार्मिक आंदोलन

देश में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् अनेक धार्मिक आंदोलन भी होनेआरंभ हो गए थे। भारतेंदु के पत्र पत्रिकाओं में राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर थे। तत्कालीन साहित्यकार, जो पत्रकार भी थे, उन्होंने युगानुरूप अपनी दिशा का निर्धारण किया। इस वैचारिक समूह का नेतृत्व भारतेंदु कर रहे थे। उन्होंने योग धर्म को पहचाना और योग को दिशा प्रदान की। 1867में जागरण और स्वाधीनता की चेतना से जोड़ते हुए 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन भारतेन्दू ने किया, जिसका मूल्य वाक्य था–अपधर्म छूटे, सत्त्व निज भारत। उस समय केवल विदेशी शासन ही हमारी व्यवस्था को प्रभावित कर रहा था। विदेशी प्रभाव में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था भी कम हो रही थी। शताब्दियों की परतंत्रता के कारण भाषा का स्वरूप भी विदेशी हो चुका था। अतः भारत द्वारा सत्त्व ग्रहण करने के उद्देश्य को लेकर भारतेंदु ने हिंदी पत्रकारिता का विकास किया और आने वाले पत्रकारों के लिए दिशा निर्माण किया। इस कारण हमकह सकते हैं कि वास्तविक राष्ट्रवादी पत्रकारिता का विकास भारतेंदु काल में ही हुआ। बीसवीं शताब्दी के आते–आते ब्रिटिश की पत्रकारिता भी यह अनुभव करने लगी थी कि भारतीय पत्रकारिता तथा वंदे मातरम का नारा भारत में क्रांति की आधारि"ाला तैयार कर रहे हैं।

स्वाधीनता आंदोलन कालीन पत्र –पत्रिकाएं

किसी भी देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया की उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी लोकतंत्र के अन्य तीन स्तंभों की. प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ और पत्रकार हिन्दी पत्रकारिता हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति, शक्ति और दिशा प्रदान की। माधुरी, समन्वय, चाँद, अर्जुन, मतवाला, सैनिक, कल्याण, सुधा, विशाल भारत आदि पत्र–पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया, मुंशी प्रेमचंद उनकी लेखनी ने जनता की मूक भावनाओं को शब्दों में ढाला और उनका साहित्य जनता की आवाज बन गया,रणभेरी, रणडंका, फितूर, रवोल्यूशन, रिवोल्ट, गदर, बगावत जैसे पत्रों ने अंग्रेज प्रशासन की जड़े हिला दीं। राममोहन राय 1830 में उन्होंने बहुभाषीय पत्र बंगदूत का प्रकाशन शुरू किया स्वाधीनता के पूर्व अपने चरम पर थी । रणभेरी पत्र ने अंग्रेज प्रशासन की चूलें हिला दीं। पराड़कर जी द्वारा हस्तलिखित इस पत्र के गुप्त प्रसार ने फिरंगियों के होश उड़ा दिए। पराड़कर जी केवल लेखक–पत्रकार या संपादक ही नहीं थे ।

उपसंहार –

अतः भारत द्वारा सत्त्व ग्रहण करने के उद्देश्य को लेकर भारतेंदु ने हिंदी पत्रकारिता का विकास किया और आने वाले पत्रकारों के लिए दिशा निर्माण किया। इस कारण हम कह सकते हैं कि वास्तविक राष्ट्रवादी पत्रकारिता का विकास भारतेंदु काल में ही हुआ। बीसवीं शताब्दी के आते–आते ब्रिटिश की पत्रकारिता भी यह अनुभव करने लगी थी कि भारतीय पत्रकारिता तथा वंदे मातरम का नारा भारत में क्रांति की आधार ि"ाला तैयार कर रहे हैं। समाज ऐसे अनेको बुराईयों का अंत कर समाज को मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य पत्रकारिता ने ही किया। लोगों में आपसी भाईचार के रहना तथा धीरे–धीरे दे"ाी रियासतों एवं जमीदारी प्रथा इत्यादि का अंत कर स्वाधीनता आंदोलन में महती भूमिका अदा की।

सन्दर्भ –

- हिन्दी पत्रकारिता (गूगल पुस्तक; लेखक – कृष्ण बिहारी मिश्र)
- भारतीय पत्रकारिता कोष, खण्ड – 2, 1901–1947 (गूगल पुस्तक; लेखक– विजयदत्त श्रीधर)
- हिंदी भाषा के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का योगदान । 2009–07–24 मशीन – प्रो. ऋषभदेव शर्मा

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और उनकी पत्रकारिता – पत्रकारिता (विशेष रूप से हिन्दी पत्रकारिता) पर उत्कृष्ट सामग्री।
- बिहार की साहित्यिक पत्रकारिता – साहित्य और साहित्यिकार। 2010–08–24 मशीन (हिन्दी नेस्ट)।
- पत्रकारिता –दुधारी तलवार (महादेव देसाई)।
- विश्व पत्रकारिता का इतिहास – इसी में हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास भी दिया है।
- दो शताब्दी पूरे करने की ओर हिंदी पत्रकारिता
- हिन्दी पत्रकारिता की भाषा का क्रमिक विकास
- भारत में पत्रकारिता, लेखक डॉ. वेद प्रकाश अग्रवाल, पृ. 123
- 'गांधी संमग्र' में उद्धृत अंश।
- 'द लीडर', इलाहाबाद, मार्च 1913 में प्रकाशित सर जेम्स मेस्टन का भाषण।
- 'भारतेंदु साहित्य में पत्रकारिता का समन्वय' डॉ. तपेश विश्वकर्मा, पाक्षिक विश्व संग्राम में प्रकाशित लेख,
- अंक 15 जनवरी, 2010
- 'भारत में पत्रकारिता का इतिहास', वीरेंद्र पाठक, पृ. 123
- 'द टाइम्स', लंदन 10 सितंबर 1906 उद्धृत नवभारत टाइम्स नई दिल्ली अंक 14 अगस्त 1983
- 'केसरी' 15 जून 1897 में प्रकाशित लोकमान्य तिलक का भाषण।
- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', संपादक डॉ. नगेंद्र, पृ. 210

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)